साहित्य अमृत

मासिक

वर्ष-२१ अंक-११ ❖ पृष्ठ ८८ | ज्येष्ठ-आषाढ, संवत्-२०७३ | जून २०१६

संस्थापक संपादक

स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र

❖

पूर्व संपादक

स्व. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

❖

संपादक

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

❖

प्रबंध संपादक

श्यामसुंदर

❖

संयुक्त संपादक

डॉ. हेमंत कुकरेती

❖

कार्यालय

४/१९, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२

फोन : २३२८९७७७ • फैक्स : २३२५३२३३

इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

❖

शुल्क

एक अंक —₹ ३०

वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००

वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००

विदेश में

एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)

वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

❖

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्यामसुंदर द्वारा ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित एवं ग्राफिक वर्ल्ड, १६८६, कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२ द्वारा मुद्रित।

❖

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय

सूखे की समस्या, न्यायपालिका की… ४

प्रतिस्मृति

आँखों देखी घटना/ *गोपालराम गहमरी* ९

डायरी-अंश

अखबार में दिखनेवाला पूरा सच नहीं है/ *रामदरश मिश्र* १२

कहानी

चार रुपए बीस पैसे/ *तुलसी देवी तिवारी* १७

पुश्ते में मकान नंबर/ *नीरजा माधव* २४

चौपाल/ *मंजु मधुकर* ४७

कर्ज का मूल्य/ *राकेश भ्रमर* ६०

पापा कब लौटेंगे/ *राकेश 'चक्र'* ७०

आलेख

'विक्रम' के पराक्रमी संपादक/ *राजशेखर व्यास* २०

हिंदी कथा-साहित्य में नारी/ *राहुल* २९

विचार कुंभ से दुनिया को संदेश/ *सिद्धार्थ शंकर गौतम* ३७

अज्ञेय—काव्य और पर्यावरण/ *मनमीत कौर* ७३

लघुकथा

झाँसा/ *अशोक गुजराती* ५९

मैं जो हूँ, हूँ!/ *अशोक गुजराती* ७५

कविता

दिल में समेटे सागर/ *श्वेता राय* ११

सौगात/ *बी.डी. बजाज* ६३

पंछी अब बिरहा गाएँगे/ *शैलेंद्र चौहान* ७९

संस्मरण

श्रीलाल शुक्ल पत्रों में/ *रमेशचंद्र शाह* ३४

भाषा-प्रयोग

हिंदी क्रियाओं का ढाँचा…/ *बदरीनाथ कपूर* ५०

राम झरोखे बैठ के

भ्रष्टाचार का सच और सदाचार की संभावना/ *गोपाल चतुर्वेदी* ५४

साहित्य का भारतीय परिपार्श्व

पागल/ *रघुनंदन* ५७

व्यंग्य

राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विश्वविद्यालय/ *मनोहर पुरी* ६४

साहित्य का विश्व परिपार्श्व

सरकारी तख्ता/ *अजीज नेसिन* ६७

यात्रा-संस्मरण

इधर बुडा, उधर पेस्ट/ *रंजन कुमार सिंह* ७६

लोक-साहित्य

किन्नौर के जनजातीय गहने/ *पवन चौहान* ८०

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ८२

वर्ग-पहेली ८३

साहित्यिक गतिविधियाँ ८४